(गाँव ज्ञान)

दामिन बस्ती और जैव-विविधता का लोक-पक्ष

तार्बा यादम

उत्तर-पूर्व को सामूहिक रूप से 'सेवेन सिस्टर' कहने का चलन रहा है। पूर्वोत्तर के ये मुख्य राज्य हैं - अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, त्रिपुरा, असम, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड और अब आठवें राज्य के रूप में सिक्किम भी इसमें शामिल हो गया है। अरुणाचल प्रदेश का नामकरण सर्वप्रथम 20 जनवरी, 1972 ई. को हुआ। इससे पूर्व यह ऐतिहासिक रूप से उदयाद्रि अथवा उदयांचल के नाम से जाना जाता था। अंग्रेजी शासनकाल में इस राज्य को 'नेफा' (नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी) कहा जाता था। भौगोलिक दृष्टि से तिब्बत, म्यांमार और भूटान की सीमा पर स्थित इस राज्य की प्राकृतिक सुंदरता मनमोहक है, जिसकी ढेरों प्रशंसा की जाती रही है। दामिन बस्ती मनोरम भूमि अरुणाचल प्रदेश के कुरूग कुमै जिले का आखिरी गांव हैं, जो प्राकृतिक रूप से बहुत खूबसूरत और मनमोहक गांव है। इनके अंतर्गत एक-दो छोटे-छोटे गांव आते हैं जैसे- कोपिला, चाते, रुबा आदि। यहां का खान-पान, रहन-सहन बहुत ही भिन्न है। अधिकतर लोग यहाँ बहुत ही मेहनती होते हैं। इस गाँव में ज्यादातर किसान ही रहते हैं, जो मेहनत करके अपनी सब्जियां और फल उगाकर बेचा करते हैं। ये लोग इसी पैसे से अपना और अपने परिवार का पेट पालते हैं। दामिन बस्ती में दो स्कूल हैं- कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय और सेकेण्डरी स्कूल दामिन। यहां के लोग बहुत ही खुले विचारों को लेकर जीवन को जीते हैं और सभी लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। इस जगह आइटीबीपी की छावनी है। सेना की मौजूदगी सीमा सुरक्षा की दृष्टि से खास है। अंतरराष्ट्रीय सीमा दामिन से इतना करीब है कि उनके बीच सिर्फ एक पर्वत की दूरी है जिसके इस पार दामिन है, तो उस पार तिब्बत स्थित है। यहाँ ऊँचाई पर बर्फ जमे होते हैं, जिसके कारण ठंड ज्यादा होती है।

दामिन वह अंचल है, जिसके अंदर में छोटी-छोटी अन्य बस्तियाँ हैं। जैसे-कोपिला, रूबा, पानियासंग, चाकते इत्यादि। 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार गाँव की जनसंख्या डेढ़ सौ थी, जिसमें पुरुष जनसंख्या 70 और महिला जनसंख्या 80 के आस-पास मानी गई। हाल के दिनों तक जनसंख्या बढ़ी है और अब इस गाँव की जनसंख्या 5000 से अधिक है। कोलोरियांग दामिन के निकट का शहर है जहाँ से लोग घरेलू सामान-वगैरह खरीदते हैं। 2018 ई. से पहले तक दामिन बस्ती में सड़क या अन्य यातायात के साधन नहीं थे। सन् 2017 से पहले इस गाँव में सड़क नहीं थी। यहाँ सड़क-मार्ग 2017 के बाद बनने शुरु हुए। बीआरओ के प्रोजेक्ट अरुणांक द्वारा पिछले 10 वर्षों से इस कठिन इलाके में सड़क-मार्ग तैयार करने का काम किया गया। यह दामिन गाँव के लिए किसी उपहार से कम नहीं था। दामिन तक मार्ग का हो जाना एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य था, जिसे बीआरओ ने एक अभियान के रूप में पूरा किया। सामान्यतः इस गाँव में 15 डिग्री से 20 डिग्री तक तापमान रहता है। अक्सर सर्दियों में तापमान 5 डिग्री से 7 डिग्री तक गिर जाते हैं। यह क्षेत्र सर्दियों के दिनों में बहुत ठंडे और गर्मियों में गर्म हो जाते हैं। पहाड़ी क्षेत्र और वन व वनस्पति से घिरे होने के कारण अन्य जिलों की अपेक्षा वर्षा बहुत अधिक होती है। दामिन गाँव में ज्यादातर समय बादल मंडराते रहते हैं।

जैव विविधता की राजधानी कुरूंग कुमै

अरुणाचल प्रदेश का कुरूंग कुमै जिला जैव-विविधता की राजधानी है। दामिन बस्ती की जैव-विविधता अपने आप में विशिष्ट है। पूरे जिले में 1321 पौधे की प्रजातियाँ मिलती हैं। औषधीय पौधे इस जिले में सर्वाधिक पाए जाते हैं। ज्यादातर कुरुंग कुमै पश्चिम कमिंग पूर्वी कमिंग में पाए जाते हैं। यहाँ जो औषधीय पौधे मिलते हैं, उनमें से कुछ मुख्य हैं-सेशिया (सर दर्द, गैस एवं पाचन, बदन दर्द, डायरिया, डायबिटिज इत्यादि), एस्ट्रिका (डायरिया, सिर दर्द, निमोनिया इत्यादि), मार्सिनासिया (त्वचा संबंधी रोग), यूट्रेकासिया (टीबी, जलने के बाद, दाँत दर्द), पिनेसिया (एंटीसेप्टिक), पोआसिया (कैंसर, डायबीटिज, दाग, पाचन संबंधी, पेट संबंधी इत्यादि।)। ये सभी औषधियाँ बड़ी काम की हैं और कई असाध्य बीमारियों को दूर करती हैं। इस जिले में हर वर्ष बाहर यानी देश-विदेश से खोजकर्ता आते हैं, जो अपने अध्ययन एवं अनुसंधान के सिलसिले में इस जिले का जगह-जगह दौरा करते हैं। तमाम तरह के अध्ययन एवं विश्लेषण का काम करते हैं। लेकिन अभी भी इस जिले के कई हिस्से ऐसे हैं जहाँ और भी औषधीय गुण वाले पौधे हैं, जिन्हें अभी तक खोजा नहीं जा सका है। यदि इस दिशा में गंभीर शोध-अनुसंधान किए जाएं तो कई सारी औषधियाँ मिल जाएंगी जिसका लाभ हर किसी को हो सकता है तथा अलग-अलग किस्म की असाध्य या लाइलाज बीमारियों का उपचार संभव है। यह सही बात है कि औषधीय पौधों की खोज के लिए भारत क्या पूरी दुनिया में अभी तक बहुत सी बीमारियों की दवा नहीं बनी है। अरुणाचल प्राकृतिक प्रदेश है और यहाँ बहुत-सी औषधियाँ भी छुपी हुई हैं, जिसकी अभी तक खोज नहीं की गई है। दामिन बस्ती में बहुत-से ऐसे औषधीय पौधे मिलते हैं जो किसी अन्य राज्य और देश में नहीं पाए जाते हैं। औषधीय पौधों की कई ऐसी प्रजातियाँ हैं जो दुर्लभ प्रकृति की हैं। जैसे-हिमालयन 'ब्लू पोपी' जो कि बस हिमालय पर्वत के इर्द-गिर्द मिलती है। दामिन बस्ती से कुछ दूरी पर ठंड के दिनों में 'ब्लू पोपी' प्रजाति के पौधे मिल जाते हैं। आर्सिया सिकाकियान एक जापानी प्रजाति 'जैक-इन पलिप्ट' का पौधा है। यह सालों भर उगता है। यह नम भूमि वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। यद्यपि इसके अरुणाचल प्रदेश में पाये जाने संबंधी कोई सूचना नहीं मिलती है, तथापि यहाँ के विज्ञानियों ने इसे खोज निकाला है। इसी तरह फलों में 'मूसा ओरनाटा' नामक पौधे भी यहाँ मिलते हैं। इसे स्थानीय भाषा में 'कुदुक' कहा जाता है। एक असामान्य वुडलैंड प्लांट अपने बैगनी रंग एवं हरे रंग के साथ सफेद धारियों के लिए प्रसिद्ध है। इसी तरह 'सौसूर्या', 'अनलुक्रेटा मात्सुम' और 'कोएज़ज' अस्ट्रिका प्रजाति एवं परिवार के हैं, जो बहुत कम पाए जाते हैं और लुप्तप्राय होने की कगार पर हैं। दामिन बस्ती के इर्द-गिर्द इसके होने की पुष्टि होती है, जो बहुत दुर्गम स्थानों एवं जंगलों के बीच पाए जाते हैं।

दरअसल, दामिन गांव में फलों की बात करें तो यहाँ 'मूसा' और 'ऑरनाता' मिलते हैं जो केले की प्रजाति है। केले की ये अधिसंख्य प्रजातियाँ बड़े उष्ण कटिबंधीय सदाबहार क्षेत्र के बारहमासी फल हैं। मुख्य रूप से ये उच्च तापमान और आर्द्रता वाले तराई क्षेत्रों में मिलती हैं। दामिन गाँव में संतरा भी अधिक पाई जाता है। अमरुद, ब्लैकबेरी आदि यहाँ के लोग उगाते हैं। दामिन बस्ती के लिए ये सब मशहूर फल हैं और बड़ी मात्रा में मिलते हैं। इसी तरह 'बाचीन' एक और लोकप्रिय फल है, जिसका वैज्ञानिक नाम 'आर्बतस यूनेदुस' है जो इरिकाशिया परिवार से है और इसका सामान्य नाम 'स्ट्राबेरी ट्री' है। बाचीन का स्वाद खट्टा रहता है, इसलिए यहाँ के लोग इसे चीनी में भिगोने के बाद ही खाते हैं। मॉरीशस स्ट्रॉबेरी प्रजाति के फल भी बड़ी मात्रा में मिलते

हैं, जिन्हें दामिन बस्ती में 'चिरीगापो' कहते हैं। इसी तरह एक और पौधा बेहद महत्त्वपूर्ण है। वह है-'कैनारियम स्ट्रिक्टम'। इस पेड़ का सामान्य नाम 'ब्लैक दाम्मर' है तथा स्थानीय नाम 'संगलुम' है और इसे असमीया में धुना कहा जाता है। ब्लैक दामर के बारे में कहा जाए तो यह एक सदाबहार पेड़ है जो 50 मीटर तक की ऊँचाई वाला होता है। इसका तना बेलनाकार होता है। मुख्य रूप से 'ब्लैक दामर' के छाल को प्राप्त करने के लिए पेड़ की ऊपरी परत की उचित देखभाल और छँटाई की जाती है। 'ब्लैक दामर' वाणिज्य की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण माना जाता है। एक अन्य वानस्पतिक महत्त्व का पौधा है-'थिसानोलाएना लैटिफोलिया'। इसका सामान्य नाम 'एशियाई झाड़ू घास' है। यह 'पोएसी' परिवार का पौधा है। इसका स्थानीय नाम 'ताजी/फूल झाड़ू' है। एशियाई झाड़ू घास एक सदाबहार झुरमुट के रूप में उगने वाला घास है। यह 2 से 4 मीटर तक लंबा होता है। इसके ऊपरी हिस्से में जो फूल होते हैं, वे धूल वगैरह को पकड़ लेते हैं। इस कारण इनका उपयोग प्रायः झाड़ू बनाने में होता है। कई बार इनका उपयोग सजावटी वस्तु के रूप में भी अलग-अलग तरीके से किया जाता है।

हरी सब्जियों का विविध रूप

दामिन गाँव में ज्यादातर हरी सब्जियाँ खाना पसंद किया जाता है। यहाँ हरी सब्जियों की कई किस्में पायी जाती हैं। इस तरह यहाँ के लोग इन सब्जियों को तरह-तरह से बनाकर खाना पसंद करते हैं। कोई उबालकर खाना पसंद करता है, तो कोई तलकर खाना पसंद करता है। वैसे तो अरुणाचल के लगभग सभी जनजातियों के लोग हरी सब्जी खाना पसंद करते हैं। इन पौधों में 'तासे' और 'ताची' पाया जाता है। स्थानीय लोग तासे को छोटे-छोटे बुरादा की तरह छिलते हैं और उसे पानी में भिगोकर नरम बनाते हैं। उसके बाद धूप में सुखाया जाता है और सूअर की मीट के साथ खाया जाता है। इसे प्रायः सूअर के खाने देने के लिए दाने के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इसी तरह दामिन गाँव में सबसे मनपसंद चीज 'अमजी दगम' होता है। दगम स्थानीय भाषा का शब्द है जिसका अर्थ 'भोजन' होता है। दामिन बस्ती में पाया जाने वाला एक महत्त्वपूर्ण पेड़ है-'संगचर'। यह स्थानीय नाम है। इसका पेड़ बहुत ही ऊंचा और ताकतवर होता है। यह हिलाने पर भी नहीं हिलता और इसके ऊपर चढ़ना पड़ता है। 'संगचर' खाने में थोड़ा तीता होता है, जिसकी चटनी बनाई जाती है। 'संगचर' के पेड़ काफी मात्रा में ही उगते हैं, इस कारण यह काफी महंगा होता है। दामिन बस्ती में 'यरक्यिंग' के पेड़ मिलते हैं, जिसके फल की सब्जी बनाने में खूब उपयोग होता है। कई लोग इसे खाना के साथ सीधे भी खाते हैं। इसका स्वाद थोड़ा तीता होता है। प्रायः 'यरक्यिंग' को खाने के समय मिर्च की तरह प्रयोग किया जाता है। इसे करा दादी के लोग 'जायर' के नाम से जानते हैं तह इसे पापुम पारे की ओर 'तायर' भी कहा जाता है। यरक्यिंग के बारे में कहा जाता है कि इसे खाने के बाद अधिक नींद आती है। खाने के साथ पेय पदार्थ भी दामिन बस्ती में बेहद लोकप्रिय है। यहाँ जब भी कुछ त्यौहार होता है या फिर सामान्य दिनों में घरों में लोकल मदिरा बनाया जाता है। यह लोकल मदिरा भी दो-तीन किस्म का रहता है। एक होता है- 'तामिक अपोंग'। यह मड़ुआ से बनाया जाता है। दूसरा पेय है-'पोना अपोंग'। यह चावल से बनाया जाता है। पहले चावल को पकाया जाता है और सुखाने के बाद नरम किया जाता है। नरम करने के बाद दवाई लगाकर उसे डब्बे के अंदर डाल दिया जाता है, ताकि अंदर हवा न जा सके। दो-तीन हफ्ते के बाद यह लोकल अपोंग पीने के लिए तैयार हो जाता है। इसी तरह काला अपोंग को भी बनाया जाता है। लोकल मदिरा बहुत किस्म का बनाया जाता है। कई लोग केले से भी बनाते हैं और आलू से भी बनाते हैं। आलू की बात करें, तो दामिन बस्ती में अधिक आलू उगाया जाता है।

लेकिन यह बाजार में बिकने वाले आलू से अलग दिखता है, जिसे यहाँ के लोग इंगी कहते हैं। इंगी भी अलग-अलग किस्म की है जैसे-'संग्ने इंगी'। यह पौधों की जड़ों में उगता है और मोटा-सा होता है। इसके अंदर से एक रेशेदार रस्सी निकलती है। इस इंगी का छिलका मोटा और कड़ा होता हैं पर देखने में मोमबत्ती के आकार की तरह लगता है। हुशे इंगी एक जंगली इंगी है, जो दिखने में गोलाकार आकृति का होता है। इसको चबाचबा कर खाया जाता है क्योंकि यह बहुत स्वादिष्ट होता है। इस इंगी को जंगल से खोदकर कठिनाई से निकाला जाता है। इसी तरह हुला इंगी किसी विशेष आकार का नहीं होता है, बल्कि आड़ा-तिरछा होता है। इसके साथ ही इस पर छोटे-छोटे काले रंग के धब्बे होते हैं। हुला इंगी खाने पर थोड़ा कड़वा लगता है और इसको पकड़ने पर यह फ़िसलने लगता है। इसी प्रकार दामिन बस्ती में अनेक तरह की इंगी पायी जाती है। जैसे-न्यिरेक इंगी, एंग इंगी, रंयेक इंगी इत्यादि। दामिन बस्ती के अधिकतर लोग इनको नाश्ते के तौर पर चाय के साथ भी खाते हैं और कई डिनर के तौर पर भी खाते हैं।

दामिन गांव में 'पीके पीला' भी बहुत मशहूर है, जो आपातानी जनजाति का मुख्य व्यंजन है। वैसे सूअर की चर्बी को इकठ्ठा करके डब्बे में रख दिया जाता है, जिसे पीके कहा जाता है। पीला केले की शाखाओं को काटकर छोटे- छोटे टुकड़ों से बनाया जाता है। इन छोटे-छोटे टुकड़ों को थोड़े समय तक धूप में सुखाया जाता है और फिर इसको जलाकर पानी डालकर पीला बनाया जाता है। यहाँ के लोग खाने पीने के बहुत ही शौकीन होते हैं। पुरानी कहावत है कि यहां की स्त्रियों को बकरी का मांस, बंदर का मांस और मुर्गियों के पेट को खाने की मनाही है। कहा जाता है कि यदि यहां की स्त्री यह सब खा ले तो उसे पाप लग जाता है। इसके साथ ही कई पुरुष भी इसे नहीं खाते, क्योंकि अगर यह सब खा ले तो उन सब की आयु कम हो जाती है। उन सबकी मृत्यु जल्दी हो सकती है। मरने के बाद वह स्वर्ग नहीं जाते यह सब कहा जाता है। पर यह सब पुरानी कहावतें हैं, जो आजकल यहां के लोग नहीं मानते हैं।

बांस से बनाई जाने वालीं सब्जियां

अरुणाचल प्रदेश में बांस की सब्जियां बहुत प्रसिद्ध है। बांस की दो किस्में हैं- ई और ताबू। ताबू भी बांस की प्रजाति है। बांस का व्यंजन अलग अलग तरीके से बनाया जाता है। दामिन के लोग बांस में खाना पकाकर खाना अधिक पसंद करते हैं, जिसे चिन्दुंग आचिंग कहते हैं। बांस को काटकर उसके अंदर केवल खाना नहीं पकाया जाता है बल्कि मांस, मछली आदि भी पकाया जाता है। यहाँ के लोग नये बांस को ई कहते हैं, जिसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर बोतल में रख दिया जाता है। थोड़े दिन बाद उसमें खट्टापन आ जाता है, जिसे ईकूंग कहते हैं। ईकूंग को सुखाकर ईयूप बनाया जाता है। जिसे यहां के लोग हरी सब्जियों में डालकर मसाले के तौर पर इसका सेवन करते हैं। स्थानीय लोग इसका प्रयोग मसाले के रूप में करते हैं। यहां के लोग ईकूंग और ईयूप के बिना हरी सब्जियों का स्वाद अधूरा मानते हैं। इसका प्रयोग उबली सब्जियों में किया जाता है। दिंक्यो और दिंग्बर भी बहुत खास है। यह दिंक्यो गाय या मिथुन के मांस से बनाया जाता है। मांस को काटकर पतली लकड़ी में घुसाकर थोड़े दिन तक उसको रापकी में सुखाया जाता है। जिसे शादी ब्याह में लड़के वाले लड़की को दिंक्यो बना कर देते हैं। दिंक्यो मछली से भी बनाया जाता है और अन्य पशु-पक्षियों के मांस से भी बनाया जाता है। ताशे आटा के जैसे होता है, जिसे यहां के लोग गर्म पानी में डालकर नर्म करके खाते हैं।

पक्षी और जानवर

दामिन गांव अरुणाचल प्रदेश के कुरूग कुमै जिले का सबसे अंतिम गांव है, जो हिमालय पर्वत के बेहद करीब है। यहां मिथुन पाया जाता है। मिथुन की बात करें तो मिथुन अरुणाचल प्रदेश के वासियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण जानवर है। यहाँ हर त्यौहार या किसी विशेष समारोह में मिथुन की बलि दी जाती है। शादी-विवाह के अवसर में वर पक्ष के लोग वधू पक्ष को मिथुन देकर वधू को अपने घर ले जाते हैं। बदले में वधू पक्ष के लोग वर पक्ष को स्थानीय आभूषण देकर उनके साथ वधू को विदा कर देते हैं। दामिन के जंगलों में भालू, बंदर, शेर, मिथुन आदि पाए जाते हैं। यहाँ पहाड़ी याक भी पाया जाता है, जो लंबे बालों वाला पालतू पशु है। यह जानवर भारतीय उपमहाद्वीप के हिमालय क्षेत्र के तिब्बती पठार, उत्तरी म्यांमार, यूनानी सिचुआन और उत्तर में मंगोलिया और साइबेरिया तक पाया जाता है। यहां के शिकारी लोगों ने भी कुछ याक को घने जंगलों में देखा है। दामिन गांव में हिरण भी दो-तीन प्रकार के मिलते हैं और बंदर भी कई तरह के हैं। पहले दामिन गांव के लोग अधिक शिकार करते थे, लेकिन आजकल शिकार करने पर पाबंदी लगा दी गयी है। दामिन गांव के लोग जंगली जानवरों के साथ घरेलू जानवर जैसे कुत्ता, बिल्ली, मुर्गा-मुर्गी, बकरी, सूअर आदि को भी पालना पसंद करते हैं। ज्यादातर लोग कुत्ते को पालना पसंद करते हैं। कहा जाता है कि कुत्ता आदमी का सबसे अच्छा मित्र है। अक्सर देखा जाता है कि गांव में जब भी मालिक शिकार या खेत में जाता है, कुत्ते अपने मालिक के पीछे-पीछे चलते हैं और समय-समय पर मालिक की रक्षा करते हैं। दामिन बस्ती में भेड़-बकरी को भी पाला जाता है, क्योंकि बस्ती में जब लोगों के घर में मेहमान आते हैं तो भोजन के लिए मुर्गी, सूअर आदि का मांस पकाकर परोसा जाता है। इस बस्ती में पशु तो हैं ही, साथ ही साथ कई प्रकार के पक्षी भी हैं जो यहाँ की जलवायु और मौसम के बदलने पर आस-पास दिखाई देते हैं। मौसम बदलने के कारण गौरैया, बाज़, कबूतर आदि समय-समय पर एक जगह से दूसरी जगह आते-जाते हैं।

निष्कर्ष रूप में कहें, तो अरुणाचल प्रदेश का बेहद खूबसूरत गाँव है-दामिन जिसका वातावरण मनोरम और जैव-विविधता से लैस, प्राकृतिक दृश्य मनोहारी है। अरुणाचल प्रदेश के कुरूंग कुमै जिला का यह अंतिम गाँव है। यहाँ तक पहुँचने का मार्ग कोलोरियांग से है। अब आवाजाही और संचार-तंत्र के फैलाव के कारण यहाँ तक पहुँचना अब कठिन नहीं रहा। बहुत पहले से अरुणाचल प्रदेश के कुरूंग कुमै जिले को जैव-विविधता की राजधानी कहा जाता रहा है, जिसका केंद्र दामिन बस्ती है। यह बस्ती कई दृष्टियों से समृद्ध और स्वस्थ जीवन का खूबसूरत उदाहरण प्रस्तुत करता है। मुझे इस बस्ती का बाशिंदा होने का गर्व है जो अपनी पहचान और विविधता की वजह से बेहद लोकप्रिय है।

*(**लेखकीय परिचय :** तार्बा यादम राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पीजीडीएफएच पाठ्यक्रम की विद्यार्थी रह चुकी हैं। मोबा: 9366546284, ई-मेल : adamkates252@gmail.com)*